# मौन दिवारों का सच

डॉ. कृष्ण कन्हैया

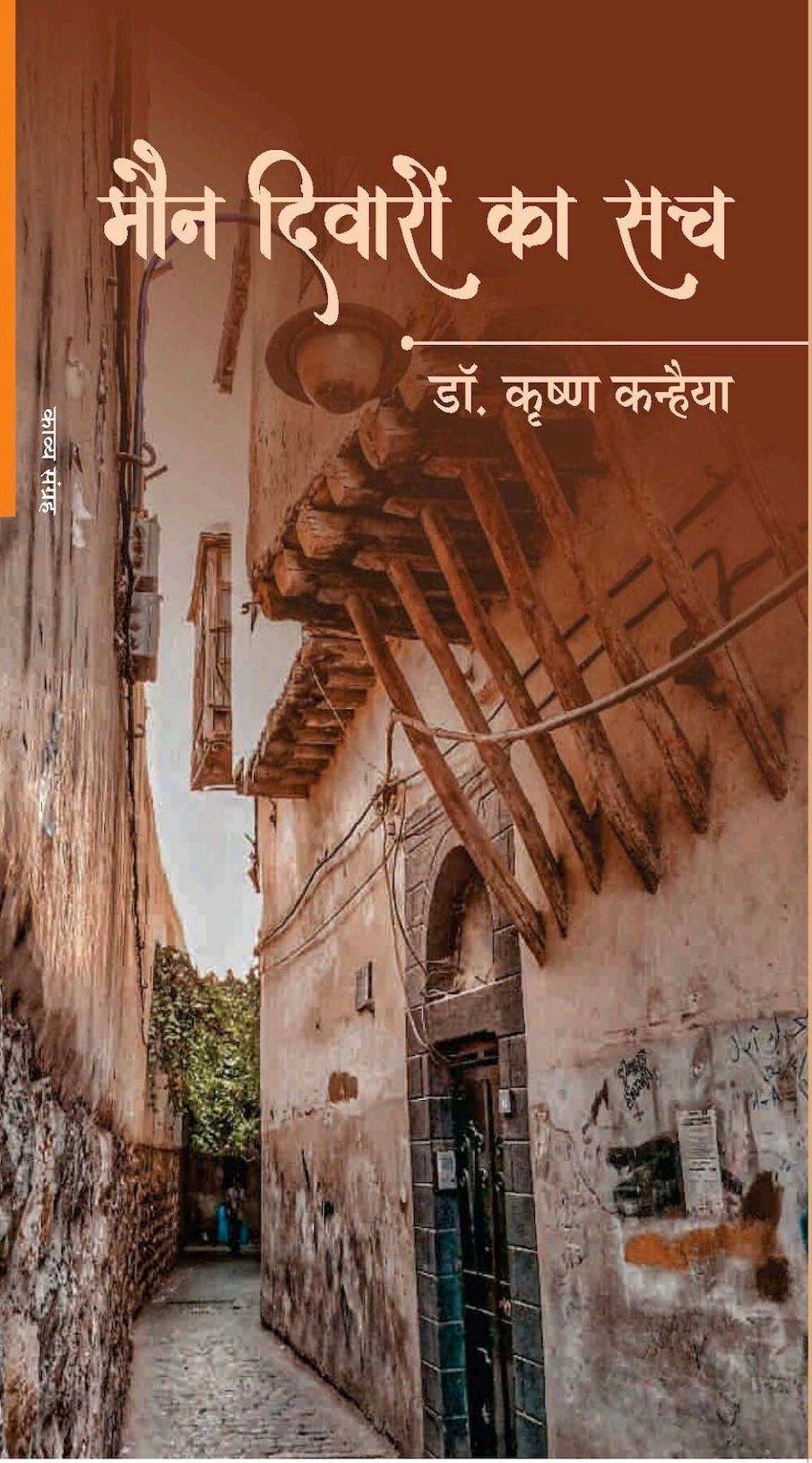

# मौन दिवारों का सच

## डॉ. कृष्ण कन्हैया

जन्म स्थान:- पटना, बिहार, भारत

शिक्षा:- एम.बी.बी.एस.(आनर्स), एम.एस.(सर्जरी), एफ.आर.सी.एस.(एडिनबरा), एम.आर.सी.जी.पी.(लंडन), डी.एफ.एफ.पी.(लंडन)।

संक्षिप्त विवरण: कविता-शायरी के साथ-साथ संगीत का शौक विद्यार्थी जीवन से था जो समय के साथ-साथ ज़िंदगी से जुड़ता चला गया। बचपन में तुकबन्दी करता था पर नियमित रूप से लिखना कॉलेज के दिनों से शुरू हुआ जो 1995 में मेरे इंग्लैंड आने के बाद भी ज़ारी है। विदेश आने के बाद अपनी संस्कृति का गर्व, अपने संस्कार की गरिमा, अपने गाँव की शुद्ध सौंधी खुशबू और अपनी मातृभूमि से अनवरत लगाव मेरी अन्तरात्मा को ज़्यादा उद्वेलित करने लगा था जिसकी झलक अब भी मैं अपनी कविताओं, ग़ज़लों और शेरो-शायरी में हरदम महसूसता हूँ।

2005 में 67 कविताओं की कविता संग्रह प्रकाशित हुई। 2008 में प्रकाशित हुई प्रवासी कवियाओं का संकलन 'सूरज की सोलह किरणें' में मेरी कवितायें प्रकाशित हुई। 2012 में द्विभाषीय कविता संग्रह "किताब ज़िंदगी की" वाणी प्रकाशन से छपी। 2013 में प्रवासी भारतीयों की कविताएँ 'देशान्तर' में कवितायें छपी । ई-पत्रिका 'अनुभूति' में कवितायें और ग़ज़ल छपी है। और त्रिमासिक पत्रिका आधुनिक साहित्य में भी कवितायें प्रकाशित होती हैं।

मैं 15 सालों से गीतांजलि बहुभाषीय साहित्यिक संगठन से जुड़ा हूँ और 8 सालों से जेनरल सेक्रेटरी हूँ। इंग्लैण्ड में देश- विदेश के रचनाकारों का हर साल कवि सम्मेलन आयोजित करता हूँ और संचालन भी करता हूँ।

2013 में लक्ष्मीमल सिंघवी एवार्ड से भारतीय काउंसिल लंडन में सम्मानित हुआ और फिर 2013 में ही पद्मानन्द साहित्यिक सम्मान से हॉउस ऑफ लार्ड में सम्मानित किया गया।


सम्प्रति: General Practioner with Special Interest

Waterfront Surgery, Brierley Hill, Dudley
DY5 1RU, West Midlands England UK

सम्पर्क: 182 Oakham Road Tividale Oldbury

West Midlands England UK B69 1PY

ई-मेल: kanhaiyakrishna@hotmail.com मोबाइल: +447803598165



मौन दिवारों का सच

प्रकाशक
विश्व हिंदी साहित्य परिषद्
शालीमार बाग, दिल्ली-110088
मो. -9811184393
vhspindia@gmail.com

978-81-921563-2-3

₹ 325

# मौन दिवारों का सच

# मौन दिवारों का सच

डॉ. कृष्ण कन्हैया

विश्व हिंदी साहित्य परिषद

सर्वाधिकार सुरक्षित

ISBN No. : 978-81-921563-2-3

© कॉपीराइट : लेखक

प्रकाशक : विश्व हिंदी साहित्य परिषद

एडी-94/डी, शालीमार बाग, दिल्ली-110088

दूरभाष : 09811184393, 011-47481521

email : vhspindia@gmail.com

मुद्रक : एपेक बिजनेस सोल्यूशन्स प्रा. लि.

4653/21, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।

प्रथम संस्करण : 2023

कुल पृष्ठ : 135

मूल्य : ₹325

Maun Diwaron Ka Sach
Krishna Kanhaiya
First Edition : 2023
Published by : Vishwa Hindi Sahitya Parishad, Shalimar Bagh, Delhi-110088
Price : ₹325

# मौन दिवारों का सच

आशा और निराशा के हिंडोले पर झूलती ये ज़िंदगी, ज़िंदगी के आरोह व अवरोह के कितने रूपों को आँखों में कब संजों लेती है पता ही नहीं चलता पर ये रूकती नहीं निरंतर गतिमान रहती है समय की तरह। समय ने रूकना सीखा ही नहीं वैसे ही ज़िंदगी रूकती नहीं केवल देह आवरण बदलती है, देह का आवरण बदलना ही नई ज़िंदगी की शुरूआत है और इस ज़िंदगी की प्रथम गुरू है प्रकृति, जो फूलों में हँसती है, नदियों सी बहती है, भ्रमरों सी गुनगुनाती है, कलियों सी मुस्कुराती है और कभी-कभी हिमगिरी-सी शांत वह दृढ़प्रतिज्ञ भी हो जाती है। मानव का एक जन्म ही प्रकृति के विविध रूपों को देखता है और प्रसन्न होता है, किंतु वह मानव जो केवल देखता ही नहीं है उसके विविध रूपों को जानने व मानने का प्रयास करता है उसे आत्मसात करता है। वह अन्य मानव से अलग हो समाज में अपनी महत्ता प्रतिपादित करता है, इससे भी अलग एक और मानव है जिसकी कार्यचित्री प्रतिमा जागृत है वह अपनी अन्तर्दृष्टि से गहरे उतर जाता है उसे हम कवि की संज्ञा प्रदान करते है। कवि वह जो पार्थिव व अपार्थिव सौन्दर्य में सामंजस्य पैदा कर कुछ नवीन रच दे, कवि सृष्टि के सौन्दर्य को अनुभव कर अनुभूति के स्तर पर अपनी रचना में सृष्टि को प्रतिबिम्बित कर दे, कवि रचित कविता की सफलता इसी से जानी जाती है कि वह संसार के पदार्थ व व्यापार को नेत्रों के आगे मूर्तिमान कर दे।

कवि कर्म रचयिता का कर्म है, यह ब्रह्मानंद सहोदर है, अतः जैसे ईश्वर के निकट बैठ कर जिस आनंद की अनुभूति होती है वैसी ही अनुभूति कवि भी कविता को पढ़ कर होनी चाहिए। कविता हृदय के गूढ़ भावों की सुगम शब्द अभिव्यक्ति है, क्योंकि शब्द ही ऐसे हैं जो कभी नष्ट नहीं होते, इसीलिए जो भाव कविता के माध्यम से काग़ज़ पर उतरते है वे सच्चाई लिए हुए निर्भीक होते है, उनमें कहीं भी झूठ नहीं होता, साहित्य को समाज का दर्पण भी इसीलिए कहा जाता है। और कवि कर्म हमें समाज की विभीषिकाओं के देखने की सूक्ष्म दृष्टि ही नहीं देता वस्तु उसे शब्दायित करने की पूर्वपीठिका भी तैयार करता है। कविता हमे पराजित या हतप्रभ नहीं होने देती बल्कि वह वास्तविकता का सामना स्वाभाविक और सुनियोजित तरीक़े से कराती है।

"मौन दीवारों का सच" डॉ. कृष्ण कन्हैया द्वारा रचित छंद मुक्त कविताओं का संग्रह है जिसकी प्रत्येक कविता अपना हृदय खोल कर पाठकों से कहेंगी कि मुझे पढ़ना प्रारंभ किया है तो अन्त तक पढ़ो, मेरी भावनाओं में छिपे चीत्कार को सुनों, मैरे अन्दर फैली हुई ख़ुशबू को महसूस करो, मुझमें फैले कीटों को मुझसे दूर करो।